31 वां सप्रू हाउस व्याख्यान

माननीय श्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड'

पूर्व प्रधान मंत्री और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष

द्वारा,

"नेपाल में हाल के घटनाक्रम और नेपाल-भारत संबंधों को आगे बढ़ाना"

विषय पर

7 सितंबर, 2018

कार्यक्रम के अध्यक्ष,
गणमान्य अतिथिगण,
महानुभावों,
देवियों और सज्जनों:

31वें सप्रू हाउस व्याख्यान में श्रोताओं के इस विशिष्ट समूह के समक्ष अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया जाना वास्तव में मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। इस प्रतिष्ठित व्याख्यान श्रृंखला का हिस्सा बनने का यह मेरा दूसरा अवसर है तथा इस अवसर के लिए और गर्मजोशी से स्वागत के लिए मैं भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

नेपाल में हाल के घटनाक्रमों पर और नेपाल-भारत संबंधों पर बोलने के लिए आपका निमंत्रण, स्वयं में इसका एक प्रमाण है कि नेपाल के मामलों में आपकी कितनी रुचि है। हम इसे एक स्थिर और समृद्ध नेपाल के प्रति आपकी सद्भावना की अभिव्यक्ति के रूप में लेते हैं।

विशिष्ट अतिथिगण,

पांच वर्ष पूर्व जब मैं तृतीय सप्रू हाउस व्याख्यान के लिए इस गौरवशाली कक्ष में आया था, तो नेपाल में परिस्थितियाँ पूरी तरह से अलग थीं।

उस समय, हम एक लंबे और दुःखदायी राजनीतिक परिवर्तन के चरम पर थे। हम पहली संविधान सभा के कार्यकाल के अंत की ओर थे, जिसे नेपाल के इतिहास में पहली बार निर्वाचित विधानसभा के माध्यम से लिखने के लिए, इतने उत्साह और उम्मीद के साथ बनाया गया था। लेकिन, संविधान सभा तब संविधान निर्माण के महत्वपूर्ण एजेंडे पर आगे कम ही बढ़ रही थी।

हमारे जैसे विविध समाज में, जहां राजनीतिक ताकतें विरोधी विचारधाराओं को लेकर चलती हैं, संक्रांति का प्रबंधन करना आसान नहीं था। जिस तरह के राजनीतिक परिवर्तन की हम आकांक्षा रखते थे, उसे हासिल करना भी आसान नहीं था। कभी-कभी ऐसा लगता था कि संक्रांति कभी ख़त्म नहीं होगी और लोगों का एजेंडा, जिनके लिए हमने इतनी कठिन लड़ाई लड़ी थी, वह कभी भी अमल में नहीं आएगा।

फिर भी, जैसा कि मैं आज आपके सामने खड़ा हूं, नेपाल में एक अलग मिजाज़ है। उस समय, अनिश्चितता की भावना चारों ओर से घिरी हुई थी, आज प्रबल आशावाद की भावना है।

एक ऐतिहासिक राजनीतिक प्रक्रिया की उपलब्धि से उत्पन्न आशावाद जिसे कभी पहुंच से बाहर माना जाता था!

इस विश्वास से उत्पन्न आशावाद कि मौलिक परिवर्तन संभव है!

नियति के बारे में स्पष्टता की भावना और वहां पहुंचने के लिए आत्मविश्वास से प्रेरित आशावाद!

देवियों और सज्जनों:

मैं आपके सामने वही आशावाद लेकर आया हूं जो आज नेपाल और नेपाली लोगों की भावनाओं को सबसे अच्छा रूप से चित्रित करता है।

एक दशक पुरानी क्रांति और फिर शांति प्रक्रिया के नेता के रूप में, मैंने उतार-चढ़ाव; तथा अवनति और एक लंबी यात्रा का प्रवाह देखा है।

मैंने जिस सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व किया वह पिछड़ेपन और अन्याय के विरुद्ध; अपने सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में सामंतवाद के चंगुल के विरुद्ध; तथा भेदभाव और निरंकुशता के विरुद्ध संघर्ष था। यह लोगों को जगाने, प्रबुद्ध करने और सशक्त बनाने का संघर्ष था।

और ऐतिहासिक शांति प्रक्रिया उन एजेंडों को संस्थागत रूप देने की एक प्रक्रिया थी जिसकी लोग आकांक्षा रखते थे; उस तरह की राजनीति खोजने की प्रक्रिया, जो लोगों को सबसे अच्छी सेवा देगी; वांछित सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था के लोगों के प्रबुद्ध विचारों को शासी दस्तावेज़ों के एक सेट में परिवर्तित करने की एक प्रक्रिया। यह प्रक्रिया कभी भी इतनी सरल नहीं थी और इसमें समय लगा।

प्रिय मित्रों,

पिछले कुछ वर्षों में नेपाल ने जो किया वह ऐतिहासिक अनुपात का परिवर्तन है। दुनिया में कहीं भी ऐसा कम ही होता है कि पारंपरिक ताक़त और सशस्त्र क्रांतिकारी बल बातचीत की मेज़ पर आते हैं, सामाजिक-राजनीतिक पुनर्गठन के सामान्य भविष्य के एजेंडे को निर्धारित करते हैं, बुलेट से बैलेट तक की यात्रा को पूरा करते हैं और पूरी प्रक्रिया, लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि द्वारा संविधान के निर्माण में समाप्त होती है, जिसमें विशिष्ट समावेशी समाज के लिए विशिष्ट समावेशी एजेंडा शामिल होता है। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि तत्कालीन 7 संसदीय दलों और सीपीएन (माओवादी) के बीच 12 बिंदुओं पर समझौते से शांति और लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हुई थी।

आज, हमने शांति प्रक्रिया के अत्यंत संवेदनशील और नाज़ुक हिस्से को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, जो पूर्व-लड़ाकों तथा हथियारों और गोला-बारूद का प्रबंधन है।

आज हमारे पास 28 मिलियन नेपाली लोगों की आशाओं और इच्छाओं का प्रतीक, संविधान है - संविधान जिसे हम विविध और अक्सर प्रतिस्पर्धी आकांक्षाओं को समायोजित करते हुए, समझौते के सर्वोत्तम संभावित परिणाम के रूप में देखते हैं।

यह संविधान ही है जो बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है। यह अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार साधनों में निहित अधिकांश अधिकारों और स्वतंत्रताओं को समाविष्ट करता है। दुनिया भर में हमारे मित्रों द्वारा जिस संविधान की सराहना की गई है, वह अद्वितीय रूप से प्रगतिशील और दूरदर्शी है!

मेरी पार्टी ने अतीत में जिसका नेतृत्व किया था उसमें सामाजिक न्याय, जनता के संघर्ष के एजेंडे में सबसे ऊपर था, और आज, सामाजिक न्याय रूपी स्तंभ संविधान में मजबूती से स्थापित है। यह देश के पिछड़े और विभिन्न जातीय समुदायों के लिए सामाजिक-आर्थिक न्याय को बढ़ावा देना चाहता है।

राज्य की नीतियों का उद्देश्य सामाजिक रूप से पिछड़ी महिलाओं, *दलितों, आदिवासी जनजातियों, मधेसियों, थारूओं,* अल्पसंख्यकों, दिव्यांग व्यक्तियों, पिछड़े वर्गों, यौन अल्पसंख्यकों, युवाओं, किसानों, श्रमिकों और पिछड़े क्षेत्रों के नागरिकों और आर्थिक रूप से निर्धन पृष्ठभूमि के लोगों का उत्थान और सशक्तिकरण करना है।

सामाजिक न्याय के अनूठे उपाय के रूप में, संविधान ने लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के तरीके बताए हैं। इसमें प्रावधान है कि राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति को अलग-अलग समुदायों और लिंगों का होना चाहिए। इसी तरह का प्रावधान प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के साथ-साथ राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुनाव में भी लागू होता है। संघीय संसद और प्रांतीय विधानसभाओं में महिलाओं के एक तिहाई प्रतिनिधित्व और निर्वाचित स्थानीय निकायों में चालीस प्रतिशत की गारंटी दी गई है।

सशस्त्र संघर्ष से सफल संविधान निर्माण तक की यात्रा किसी भी तरह से सरल नहीं थी। हमें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा और हमें हर तरह की विषमताओं से गुजरना पड़ा। अथक संकल्प के साथ, हम आगे बढ़े। यह संकल्प था समाज को बदलने का; संकल्प, अन्याय और पिछड़ेपन को दूर करने का; और संकल्प, लोगों के जीवन में बेहतर दिनों के देखने का। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस ऐतिहासिक परिवर्तन को पूरा करने में हमें भारत तथा दुनिया भर के मित्रों और शुभचिंतकों का बहुमूल्य समर्थन मिला।

प्रतिष्ठित श्रोतागणों,

चुनाव पूर्व वामपंथी गठबंधन का गठन और चुनाव के बाद नेपाल में दो सबसे बड़ी कम्युनिस्ट ताक़तों का विलय, नेपाल के राजनीतिक विकास में एक और परिवर्तनकारी कार्यवाही रही है। एक एकीकृत, प्रगतिशील वामपंथी ताक़त हमारे लोगों की लंबे समय से चली आ रही इच्छा थी। उनमें से अधिकांश, वामपंथी दलों को वोट देते थे, लेकिन जब तक वामपंथी दल एक नहीं थे, तब तक यह वोट बंटे हुए थे।

एक राजनीतिक प्रक्रिया को पूरा करने और लोगों के संविधान के माध्यम से लोगों के एजेंडे स्थापित करने के बाद, प्रगतिशील राजनीतिक ताक़तों के रूप में हमें एक और चुनौती का सामना करना पड़ा। अभिलाभ को संरक्षित करने की एक बड़ी चुनौती, संविधान की आकांक्षाओं को ज़मीन पर उतारने और उसे लोगों के दैनिक जीवन में साकार करने की चुनौती! विभाजित रह कर हम ऐसा नहीं कर सकते थे। संयुक्त होकर हम कर सकते थे। इस अनिवार्यता ने वाम दलों को पहले एक घोषणापत्र और फिर विलय के द्वारा एक चुनावी गठबंधन बनाने के लिए प्रेरित किया।

यह एक साहसिक निर्णय था और परिणाम वामपंथी दलों के लिए तथा देश की स्थिरता और बेहतर शासन के लिए फ़ायदेमंद था।

प्रांतीय और संघीय चुनावों में, वाम गठबंधन (और अब नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी) को नेपाल के लोगों का एक शानदार जनादेश मिला। आज नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी की न केवल केंद्र में बल्कि 7 नवगठित प्रांतों में से 6 में भी मजबूत सरकार है। वोट शेयर की गणना में, एनसीपी नेपाल के 77 ज़िलोंमें से 74 में सबसे ऊपर है, जिसमें 20 में से 17 तराई-मधेस जिले शामिल हैं।

हम पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि वामपंथ की जीत, हम पर लोगों के भरोसे का परिणाम है।

विश्वास है कि हम देश को एक मजबूत और स्थिर सरकार प्रदान करेंगे;

विश्वास है कि स्थिर सरकार इसके बजाय देश के प्रभावशाली विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक सक्षम वातावरण प्रदान करेगी;

विश्वास है कि हम देश के विकास में बाधक भ्रष्टाचार और खराब शासन की बुराइयों को जड़ से ख़त्म करने के लिए सक्षम और प्रतिबद्ध हैं;

विश्वास है कि हमारा नेतृत्व राष्ट्रीय एजेंडा को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा सकता है, राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सकता है और राष्ट्र की गरिमा में वृद्धि कर सकता है।

और अपनी ओर से हम वचनबद्ध हैं कि हम अपने लोगों को निराश नहीं होने देंगे। हम उनका भरोसा टूटने नहीं देंगे।

देवियों और सज्जनों,

राजनीतिक प्रक्रिया ख़त्म हो चुकी है, नेपाल के लिए अब जो बचा है वह है आर्थिक परिवर्तन। आर्थिक परिवर्तन के अभाव में राजनीतिक लाभ क़ायम नहीं रह सकता।

आर्थिक परिवर्तन प्राप्त करना कठिन कार्य है। आज भी हमारा समाज ज्यादातर कृषि प्रधान है और कृषि काफी हद तक निर्वाह-आधारित लैंडपूलिंग, कृषि के व्यावसायीकरण तथा बेहतर इनपुट और प्रौद्योगिकी में निवेश पर आधारित है।

बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के बिना विकास और समृद्धि असंभव है जिसके लिए निजी क्षेत्र की संपन्नता, क्षमता और उद्यमशीलता-उन्मुखीकरण की आवश्यकता है, केवल लगान मांगने की प्रवृत्ति नहीं। नेपाल का निजी क्षेत्र अब भी प्रारंभिक चरण में है जिसके लिए सशक्तिकरण की आवश्यकता है। हमारे विकास लक्ष्य तक पहुंचने के लिए घरेलू संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। हम अधिक से अधिक विदेशी निवेश हासिल करने पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

आधारभूत संरचना न केवल देश की समृद्धि का पैमाना है, बल्कि वह नींव भी है जो समग्र अर्थव्यवस्था के विकास को गति देती है और आर्थिक गतिविधियों में विविधता लाने में मदद करती है। निर्बाध सड़क संपर्क के बिना औद्योगीकरण असंभव है। नेपाल के कई गाँवों में अभी भी एक अच्छी, ब्लैकटॉप सड़क देखना शेष है और इस स्थिति को दूर करना हमारे सामने सबसे बड़ा काम है।

हम दोनों देश आज जनसांख्यिकीय लाभांश कोष का लाभ उठा रहे हैं। विकास की दृष्टि से यह दुर्लभ अवसर है। हमारे युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है जो उन्हें कंधे से कंधा मिलाकर चलने और देश की विकास प्रक्रिया को बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करे। इसी तरह, हमें अनुसंधान और नवाचार केंद्रों की आवश्यकता है।

इन सभी क्षेत्रीय परिवर्तनों की कुंजी, शासन का मुद्दा है, जिसे हमारे देशों में अभी सुधारा जाना है। शासन में रूपांतरण के लिए, हम नेपाल में कानूनी और सहज सुधार को आगे बढ़ा रहे हैं। हम समान रूप से जानते हैं कि शासन में सुधार तभी संभव है जब समाज की 'ड्राइविंग सीट' उदाहरण प्रस्तुत करते हुए नेतृत्व करे।

देवियों और सज्जनों,

हमारे लिए समृद्धि की ओर यात्रा एकमात्र उपक्रम नहीं है। हम देखते हैं कि हमारी समृद्धि हमारे बड़े पड़ोसियों की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है और हम उनके साथ जिस प्रकार की साझेदारी करने में सक्षम हैं।

एक करीबी पड़ोसी के रूप में, भारत को विकास के पथ पर तेजी से बढ़ते हुए और उसके बढ़ते हुए वैश्विक क़द को देखकर प्रसन्नता होती है।

चाहे वह बड़े पैमाने पर आधारभूत संरचना का निर्माण हो या औद्योगिक गलियारे का विकास;

सूचना और संचार इंजीनियरिंग में विश्व स्तर की उन्नति हो या उपग्रहों का प्रक्षेपण,

और सबसे ऊपर, लगभग सात दशकों की निर्बाध लोकतांत्रिक प्रथा और निस्संदेह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में लोकतांत्रिक संस्थाओं का सफल एकीकरण!

भारत की बहुआयामी प्रगति ने न केवल हमें प्रेरित किया है बल्कि हमें ठोस सबक़ भी दिया है कि चीजें संभव हैं।

प्रिय मित्रों,

हमारा सभ्यतागत बंधन है जो हमारे दोनों समाजों की वर्तमान परिभाषित सीमा के साथ आधुनिक राष्ट्रों के रूप में जन्म लेने से पहले ही बन चुका था। हमें संयुक्त रूप से परंपरा के ख़जाने; प्राचीन ज्ञान की प्रचुरता विरासत में मिले हैं; और आज भी, साझा संस्कृति और विद्या, मिथक और पौराणिक कथाएं, कला और वास्तुकला, साहित्य और जीवन शैली हमारे संबंधों की विशिष्ट पहचान बनी हुई हैं।

आज भारत *'सबका साथ, सबका विकास'* के नारे के साथ अपनी विकास यात्रा पर गतिशील है जबकि नेपाल के विकास का विज़न *'समृद्ध नेपाल सुखी नेपाली'* में निहित है। दोनों समावेशी और सतत विकास प्रक्रिया के लिए परिवर्तनकारी विज़न हैं जो किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना चाहते हैं।

समृद्ध नेपाल की ओर यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में, हम जल्द से जल्द एलडीसी स्थिति से चिन्हांकित होना हैं और 2030 तक मध्यम आय वाले देश का दर्जा हासिल करना चाहते हैं, जो सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समय सीमा है।

संबंधित सीमा से परे, हमारे दोनों देश क्षेत्रीय समृद्धि और बेहतर क्षेत्रीय सहयोग का सपना साझा करते हैं। अभी एक हफ्ते पहले, बिम्सटेक राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों का चौथा शिखर सम्मेलन काठमांडू में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। नेताओं की घोषणा ने बंगाल की खाड़ी के लिए शांतिपूर्ण, समृद्ध और टिकाऊ क्षेत्र की आकांक्षा को अच्छी तरह से व्यक्त किया है और इस दिशा में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं, जिसमें क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ाना भी शामिल है।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय प्रक्रिया, अर्थात् सार्क के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में, नेपाल की इच्छा है कि इसे पुनर्जीवित किया जाए और रुके हुए शिखर सम्मेलन के शीघ्र आयोजन के लिए अनुकूल वातावरण पर विचार किया जाए। हमारा मानना है कि सार्क और बिम्सटेक एक दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं करते बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।

क्षेत्र से परे और वैश्विक मोर्चे पर, भारत और नेपाल दोनों ही 2030 तक हासिल किए जाने वाले 17 सतत विकास लक्ष्यों का हिस्सा हैं। हम दोनों, विकासशील देशों द्वारा विशिष्ट रूप से सामना किए जाने वाले मुद्दों के, अंतर्राष्ट्रीय मंचों में पैरोकार हैं और एक निष्पक्ष और अधिक समावेशी वैश्विक विकास संरचना के लिए आवाज़ भी उठाते हैं। हम सभी देशों के लिए बेहतर 'लेवल प्लेइंग फ़ील्ड' की बात करते हैं।

देवियों और सज्जनों,

आप पूछ सकते हैं: क्या हमारे संबंध हमेशा सहज और परेशानी मुक्त रहे हैं? बिल्कुल भी नहीं। हमने मुश्किल समय भी देखा है। यदि बीते हुए को याद करने पर, हम आसानी से कह सकते हैं कि मुश्किल समय से बचा जा सकता था अगर हम चीजों को अधिक प्रबुद्ध परिप्रेक्ष्य में देखते और चीजों को बेहतर तरीके से देखते।

बहरहाल, अच्छी बात यह है कि मुश्किल समय में भी, हम लगे रहे और बीच बीच में आने वाली उन अड़चनों से स्वयं को मुक्त करने के लिए ईमानदारी से प्रयासरत रहे। हमने इस तरह की अड़चनों से अपने संबंधों की मजबूत नींव को कमजोर नहीं होने दिया। अब, हमें आगे देखने की जरूरत है। और ऐसा करने में, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अतीत की गलतियों को दोहराया न जाए।

हमें पड़ोसियों के बीच उस संबंध को स्वीकार करना होगा जो अद्वितीय प्रकृति का है और आपसी विश्वास, समझ और एक दूसरे की संवेदनाओं और चिंताओं के लिए सम्मान ऐसे संबंधों की नींव को मजबूत करने में योगदान देता है। संप्रभुता का सम्मान, क्षेत्रीय अखंडता और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना विश्वास को मजबूत करने में मदद करता है जो मैत्रीपूर्ण संबंधों को संचालित करने के लिए नितांत आवश्यक है। मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं: छोटे पड़ोसियों की कुछ संवेदनाएं होती हैं जिन्हें समझने की और सम्मान करने की आवश्यकता होती है।

भारत के साथ हमारी विकास साझेदारी काफ़ी है। और हम इस साझेदारी को और गहरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। दशकों के बाद, हम मजबूत जनादेश के साथ एक मजबूत सरकार बनाने में सक्षम हुए हैं और हम इसे एक उत्कृष्ट अवसर के रूप में देखते हैं।

हाल ही में, उच्चतम राजनीतिक नेतृत्व के मार्गदर्शन के बाद, हमारे दोनों देश द्विपक्षीय समझौतों और उपक्रमों के सही समय पर कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमें धरातल पर सकारात्मक परिणाम दिखने शुरू हो गए हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि प्रधान मंत्री मोदीजी ने इतने वर्षों में नेपाल की यात्रा चार बार की है। इसे नेपाल-भारत संबंधों के इतिहास में एक ऐतिहासिक विकास के रूप में याद किया जाएगा।

हमारे द्विपक्षीय विकास कार्यकलापों में सीमा पार आधारभूत संरचना को उचित रूप से सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। जल्द ही, हम सीमा पार रेलवे संचालन को देखेंगे। व्यापार, पारगमन और लोगों की आवाजाही को सुविधाजनक और सुगम बनाने के लिए प्रमुख सीमा बिंदुओं पर सीमा पार एकीकृत चेक पोस्ट विकसित किए जा रहे हैं। हमारे संबंधित राजमार्गों को मुख्य सीमा बिंदुओं से जोड़ने वाली सड़कों को अपग्रेड किया जा रहा है। इनमें से कुछ बिंदुओं पर अभी भी अड़चनें मौजूद हैं, जिन पर हमें तुरंत ध्यान देने की जरूरत है।

नेपाल की क्षमता और भारत की व्यापक आवश्यकता को देखते हुए, जल और पनबिजली का प्रबंधन हमारे सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र है। कुछ बड़ी परियोजनाएं पहले से ही कार्यान्वित की जा रही हैं, जिनकी सफलता ऐसी अन्य परियोजनाओं के लिए आकर्षक मिसाल कायम करेगी।

ख़ास क्षेत्रों को छोड़कर, हम नेपाल-भारत संबंधों की समग्र तस्वीर का भी उसकी समग्रता में आकलन कर रहे हैं। दोनों पक्षों ने 21वीं सदी की वास्तविकताओं के अनुरूप इन संबंधों को अद्यतन और उन्नत करने की आवश्यकता को अनुभव किया है और इस उद्देश्य के लिए, हमने संयुक्त रूप से एमिनेंट पर्संस ग्रुप से उपयोगी अनुशंसाएं देने के लिए अनुरोध किया है। उम्मीद है कि ग्रुप अपनी रिपोर्ट जल्द ही सौंपेगा। हमारे संबंधों को आपसी संतुष्टि की नई ऊंचाइयों को छूना चाहिए।

देवियों और सज्जनों,

जैसा मैंने पहले कहा, नेपाल-भारत संबंध न केवल घनिष्ठ पड़ोसियों के रूप में सह-अस्तित्व के लंबे इतिहास की साझा विशेषताओं पर बने हैं, बल्कि इस तथ्य से भी प्रेरित हैं कि हमारी नियति आपस में जुड़ी हुई है।

हमारे संबंध केवल सरकारी स्तर तक ही सीमित नहीं हैं। हमारे पास लोगों से लोगों के बीच संपर्कों का एक व्यापक दायरा है जो हमारे संबंधों को एक ठोस आधार प्रदान करता है। हमारे संबंध गहरे और व्यापक, दोनों हैं।

हमारी समान आकांक्षाएं हैं और संबंधित विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हम दोनों लोकतंत्र हैं और इसलिए, कई बार हमारी प्रक्रिया धीमी, अप्रिय और शोर से भरी दिखती है। कई हितधारकों के साथ काम करने में स्वाभाविक रूप से अधिक समय लगता है। हालांकि, अधिक आत्मनिर्भर होने की संभावना - इस प्रक्रिया का अंतिम परिणाम है।

नेपाल और भारत दोनों ही अत्यधिक विविध समाज हैं और हम दोनों को इस विविधता के प्रबंधन की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हम इन चुनौतियों से कैसे निपटते हैं, इससे हम सीख सकते हैं और इस बीच, एक-दूसरे के प्रयासों की सराहना करना सीख सकते हैं।

प्रगति के बावजूद, हमारे देशों में गरीबी अब भी बड़े पैमाने पर है। गांवों में, सैकड़ों-हजारों घर अब भी बुनियादी सार्वजनिक वस्तुओं से वंचित हैं, जबकि हमारे शहरों में अभी भी हर नुक्कड़ पर झुग्गियां हैं।

हमें यह सुनिश्चित करने में कितना समय लगेगा कि हमारे लोगों के पास एक अच्छा घर, अच्छे कपड़े और पर्याप्त पोषण सामग्री के साथ गुणवत्तापूर्ण भोजन हो? हमें यह सुनिश्चित करने में कितना समय लगेगा कि हमारे युवा विश्व स्तरीय शिक्षा प्राप्त करें जो उन्हें सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनाए? ये और इससे मिलते-जुलते ऐसे प्रश्न हैं जो हमारे दोनों देशों को टकटकी लगा कर देखते हैं और ये बताते हैं कि विकास और विकास को किसी अन्य विचार से ज्यादा महत्वपूर्ण क्यों माना जाना चाहिए।

प्रिय मित्रों,

इसलिए हम कहते रहे हैं कि हम भारत के साथ मजबूत आर्थिक साझेदारी चाहते हैं।

एक ऐसी साझेदारी जो हमारे दोनों देशों को एक साथ बढ़ने में सक्षम बनाए;

एक ऐसी साझेदारी जो हमारे युवाओं को घर पर अच्छे रोज़गार के अवसर सुरक्षित करने में मदद करे;

एक ऐसी साझेदारी जो नेपाल की संरचनात्मक बाधाओं को दूर करने में मदद करे क्योंकि वह बंदरगाह विहीन और सबसे कम विकसित देश है;

एक ऐसी साझेदारी जो पारस्परिक रूप से लाभकारी और लाभकारी व्यापार संबंधों को बढ़ावा दे;

एक साझेदारी जो औद्योगीकरण, निवेश के प्रवाह, प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और तकनीकी ज्ञान को बढ़ावा दे और मूल्यश्रृंखला में अपनी अर्थव्यवस्थाओं को जोड़े;

एक ऐसी साझेदारी जो हमारे पारस्परिक लाभ के लिए हमारे विशाल जल संसाधनों सहित प्राकृतिक संसाधनों को बेहतर उपयोग की ओर ले जाती है;

एक ऐसी साझेदारी जो सभी प्रकार की निर्बाध सीमा पार आधारभूत संरचना का नेतृत्व करती हो;

एक ऐसी साझेदारी जो हमारे लोगों को पर्यटन के माध्यम से जोड़ती हो और हमारे सांस्कृतिक कोष का निर्माण करती हो!

इसका अर्थ है कि इस तरह की साझेदारी का एक मजबूत आर्थिक आयाम होगा। यह हमारे संबंधों के सदियों पुरानी सभ्यता घटक के उन सभी सकारात्मक गुणों के प्रति पूरी तरह से गुणानुरागी होगा। और साथ ही, यह अंतरराज्यीय संबंधों के मौलिक सिद्धांतों अर्थात् समानता, पारस्परिक सम्मान, पारस्परिक लाभ और अ-हस्तक्षेप की ठोस नींव पर खड़ा होगा।

मुझे विश्वास है कि एक शांतिपूर्ण, स्थिर, समृद्ध और लोकतांत्रिक नेपाल हमारे पड़ोसियों, क्षेत्र और उससे परे सबके हित में है और रहेगा।

देवियों और सज्जनों,

मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। यह विशेष अवसर प्रदान करने के लिए मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं।

*****